37. "छूटने के उपाय"

आत्मा के बचने - छूटने अथवा निर्वाण - मुक्ति इत्यादि के सरल उपाय.....?

मर्यादित पुरुष आर्थिक व्यवहारिक कृत करना .....! "प्रारब्ध" रूपी मानसिक - शारीरिक - व्यवहारिक सभी निजी - सामाजिक - धार्मिक - नीतिज्ञ राज इत्यादि निश्चित कर्म - कार्य किए जा चुके हैं - अतः इन सभी महान व्यवहारों का नतीजा भी निश्चित ही है .....! उन्हें हटाना - बढ़ाना - गायब कर देना इत्यादि का

विचार भी केवल मूर्खता ही है - इसका अंश मात्र भी बदलना तो एक तरफ रहा - हिलाना भी केवल घोर असंभव ही है प्रत्यक्ष या भविष्य काल में भी.....! अर्थात अपने सभी कृतियों को स्वीकारना और मन से विद इंटरेस्ट इन्हें भोगना - भुगतना जैसे कि एक छोटा सा बच्चा शहद को चाटता है .....! तथा आगे सदा के लिए पूरी ईमानदारी से केवल तोबा विशेष....! आप के वर्तमान - भविष्य का सुख या दुख केवल इसी फैसले का आधार बनेगा.....! जड़ - चेतन की पूजा - अर्चना - ध्यान - जप - प्रार्थना इत्यादि का कुछ भी प्रभाव कमाए जा चुके नतीजों पर पढ़ना असंभव है.....! इसलिए अपना कीमती समय - श्वास - पूंजी - एनर्जी इन मिथ्या व्यवहारों पर व्यर्थ खर्च करने के बजाय शीघ्रता से ठीक निर्णय का चयन करें और बिना रुके भटके - भटकना शुरू कर दे "तेरा भाना मीठा लागे" को खुले मन से चरितार्थ स्वीकार करें.....! यह भी तभी संभव होगा जब आप "केवल धुर वचनों" को प्रमाणिक रुप से व्यवहारिक "अम्ली जामा" पहनायेंगे.....! रटने - गाने - नाचने - कूदने - जपने - स्नान - तीरथ - पढ़ाने पढ़ने इत्यादि से कुछ भी लाभ मिलने वाला नहीं है.....! अपने महान बनाए हुए ऐप - सॉफ्टवेयर को जल्दी से बदले - अपग्रेड करें तभी आपकी कुछ बात आंशिक रूप से शायद कुछ बनने - बदलने लगे.....! अन्यथा लगे रहो भाई.....? कुछ भी होने - बदलने वाला नहीं है सिर्फ एक हाय - हाय - मार डाला रे के.....! सामने

से गुड़ - गोलक हटा दो फिर देखो बाकी क्या बच जाता है.....? कौन से गुरु - सतगुरु - गद्धियां - सेवक फ्री में कुछ भी देने का दावा करने वाले परमार्थी - शरणार्थी - अजीब - अजीब से अर्थ-साखियां बताने वाले जो शायद भूतकाल में भूत बने आवारा गली में एचडी कैमरा लिए फिर रहे थे और अचानक उन्हें कुछ ऐसा ज्ञान - बोध हो गया कि वर्तमान काल के प्रचारक केवल - आपका नहीं बल्कि पूरे कलयुग को ही हवाई गोटी बनाकर स्पेस में कहीं गायब कर देने वाले उद्धारक - मसीहा बन - बना दिए गए वह भी घर - घर में विद्यमान सुशोभित इतनी ऑप्शंस लिए हुए कि आप भी कंफ्यूज हो जाएंगे की किस - किस से फ्री में नाम अमृत - शब्द - मार्ग इत्यादि लिया जाए .....! "मनमुख मुग्ध कुछ बझै नाहीं - बाहर भालण जाई ।"

कलयुग में प्रभु को भी टीचरों की भर्ती करने की जरूरत आन पड़ी.....? वह भी ऐसे जो कभी ना तो स्कूल ही गए और ना ही कभी उनका पढ़ने का मन नहीं किया - फिर भी ऐसी सिफारिश है कि यह उस घराने से संबंध रखते हैं या उनके महान कृत्यों को करने - कराने वाले महानतम फॉलोअर्स विशेष है जिसे की एक पूर्वज की ड़ाक्टरेट - आंशिक सफलता का भी पेटेंट अगली पीढ़ियों को अपने आप ही काबिल - अधिकारिक मसीहा इत्यादि बना दिया जाता है ! या सुरक्षा - आत्मा को मुक्त करा देने वाला साबित होने लगता है मीडिया इत्यादि के व्यवहारिक

रूप से.....! क्या कर सकता है बेचारा प्रभु भी - पढ़ने वाले जो आठ अरब से भी अधिक होते जा रहे हैं .....? इन्हें साक्षर करने हेतु कुछ तो उपाय करना करने ही होंगे.....? राजनीतिक - धार्मिक तौर पर तो क्या भयानक बाढ़ सी ही आ गई है - इन मसीहों - एक्सपर्टों - प्रोफेशनल्स की वो भी ऐसे जो आईआईटी इत्यादि को जेब में लिये फिरते हैं.....? बेचारा साधारण सा मानव इस आंधी में तो भटक अथवा माइग्रेट ही तो हो सकता है.....! ये है मुक्त - साक्षर होने का नतीजा जो उसने अपने अपना खून भेच घूस - सिफारिश से हासिल किया था.....! फिर भी रोज सुबह नए-नए अजीब से काबिल - अभ्यस्त टीचर - एक्सपर्ट नए - नए तरीकों डिजाइनों उपायों को ले कर के मैदान में दण्ड पेलते दिखाई देते हैं - वह भी केवल आपको ही सुरक्षित - मुक्त करा देने हेतु.....? इन सभी महान उपायों प्रयोगों के बाद भी टू - थर्ड से अधिक दुनिया - समाज भुखमरी - प्रत्येक अंग का बलात्कार करवाता हुआ - अभावों में ही डूब - मर रहा है - फिर भी वह शेख - चिल्ली अपने ही गुणगान गाने - बताने में टल्ली - मशगूल विशेष है.....?आखिर में अपनी प्रत्येक स्वतंत्रता की हद - सीमा तो बांधनी होगी अपनी जिम्मेदारियों का पूरी तरह से निर्वाह करते हुए घर - परिवार समाज तथा विशेष रूप से प्रकृति हेतु.....! किसी भी काल में आजादी का मतलब कहीं भी कुछ भी उगलना - हगना - मूतना - कामना या काम नहीं होता.....? पहले आपको

अपने कर्तव्य - मर्यादा का ज्ञान होगा होना आवश्यक है फिर अधिकार का.....! दूसरे के क्षेत्र में अधिकार वर्जित है.....! आंशिक दखल भी केवल नर्क का तड़पाने वाला आधिकारक सामान विशेष ही है.....? मनुष्य जन्म में "मनुष्यता कमाना ही धर्म विशेष है" ना कि प्रभु स्थान को हथियाने के उपाय करना - ढूंढना.....! मनुष्यता का अर्थ - भाव अपना अपने जायज मर्यादित-पुरुषार्थ से अर्न - हासिल किए हुए साधन - उपलब्धियों को परिवार - समाज - प्रकृति में खुले हृदय से विचरते हुए आवंटित करते रहना है.....! इसी में प्रभु की रजा प्रसन्नता निहित है.....!

आप ने कुछ न करके भी एक चमत्कार कर ही दिया कौन सा भई ? अरे आप ने साबित जो कर दिया कि जढ़ जो है वो बुद्धि - चेतन को नियन्त्रित कर सकता है...! वो कैसे...? वो ऐसे कि जब आप अपनी समस्यओ के निवारण हेतु एकस्पर्ट यानी के पत्री पढ़ने वालो के पास जाते है तो वे आप के जन्म से ले कर मृत्यु तक के सभी पहलू - परिस्थतियो मे आप को केवल जीत तथा सुख सुविधा का ही संयोग बने - ऐसी पैकेज डील देते है कि आप स्वार्थ - लोभ में अंधे हो कर अपना सब कुछ लुटाने को ही तैयार हो जाते है...! बीच में अगर कुछ बाधाएं आती भी है तो उन सब का निवारण भी इन महानुभावो के पास पहले से ही तैयार -उपलब्ध विशेष होता है । आपने तो बस केवल अपनी

सुविधा अनुसार केवल चयन ही करना होता हैं...! आपने कभी सोचा भी है कि कैसे ये गृह - नक्षत्र इत्यादि जो केवल एक जड़ - पत्थर -धूल मिट्टी इत्यादी कैमिकल के सिवा और कुछ भी नहीं है - आप के सभी सुखो सुविधाओ का इन्तजाम विशेष कर देते है वो भी लाखो - करोड़ो मील दूर होते हुऐ भी आप को सन्तुष्ट - प्रसन्न विशेष कर देते है...? आप "चेतन आत्मा" हो जो बुद्धि का प्रयोग कर उस सृष्टि में कुछ भी करने में अपने आप को निपुण बना सकते हो - लेकिन आप अन्धे बन कर इन सभी जड़ नक्षत्र - मण्डल तारों इत्यादि के ईशारे पर नाचने लगते हो - अपने सभी कई पीढ़ियो दवारा मेहनत - मशकत से कमाये - उपलब्ध साधनो विशेषो को पूरी तरह से लुटाने लगते हो - उन भूत बने गृहो इत्यादि के नाम पर...! बल्कि ये तो खुद किसी के "भय" में निरन्तर चोटे खाते हुऐ - भूत की तरह से बिना रुके भाग - दौड़ विशेष रहे है - शायद स्वंय के वजूद को बचाने रखने के हेतु...! "भय विच सूरज भय विच चन्द- कोह करड़ी चलत न अन्त !" ये सब एक दुलर्भ चमत्कार नही है तो और क्या है...? असल में जो कुछ भी आप को प्राप्त होता है सुख - दुख - संयोग - वियोग - अभाव - चिन्ता - लाभ - हानि - सुन्दरता - कुरुपता - रंग - भेद - जाति - वर्ण - किस्मत - आशा - निराश - हत्या -चैरित इत्यादी सभी प्रकार के अभाव और उपलब्धियां - बुद्धि सहित सिर्फ और सिर्फ आप के ही पिछले जन्मो में कमायें हुए

कारनामो – कर्मकाण्डों विशेषो का ही परिणाम रुपी आवश्यक फल विशेष है...! किसी भी लोजिक विशेष से आप इन्हें ब्याज सहित भोगे – भुगते – भुगतान किये बिना बच ही नहीं सकते...! और बाकी थियोरियों विशेषो पर तो विचारना भी केवल एक मूर्खता ही है। "हे कोन्तय तेरा तो बस केवल एक कर्म करने पर ही अधिकार विशेष है – "फल पर नहीं" – वो तू मुझ पर छोड़ दे...!" कितना बड़ा लोजिक है जो इन वचनों को उच्चारण करने वालों को एक तरफ तो "प्रभु" मान पूजा करते हैं – फिर थोड़े टेड़े से होकर इस "परम" सत्य को ही झूठलाने हेतु दिन – रात प्रयन्न विशेष – विशेष निरन्तर करते रहते हैं – केवल साधन संपन्न यजमानो को संतुष्ट विशेष करने हेतु...! हुआ ना यह भी एक प्रकार का लोभी – स्वार्थी दुर्लभ चमत्कार विशेष...? कितनी बढ़िया बात है कि जो आपकी सभी समस्याओं – बाधाओं का समाधान कर आप को सन्तुष्ट – प्रसन्नचित बना देता है – स्वयं के मामले में पूरी तरह से अपंग ही हो जाता है और अपने अभावों से बचने – उभरने – छुटकारे हेतु आप के ही आगे बढ़े ढंग से झोली फैला कर के बैठ जाता है...! यह तो सबसे बड़ा लोजिक है भाई ...? यही हाल नाम – अमृत – शब्द इत्यादि बांटने – पढ़ाने वालों का भी है – कानों में फूंका जाता है और लफ्ज नाम साबित हो जाते हैं – मीठे शरबत को श्लोकों से पढ़ – बांध कर अमृत बनने के लिए मजबूर कर दिया जाता है...! पढ़ाने वाला जो शब्दों

को गुरु – परमात्मा – नाम – अमृत इत्यादि साबित कर देता है वो भी आपके आगे टोकरा रखे बैठा दिखता है "भीख सा मांगता हुआ" असल में वो भी आप की ही तरह से शब्द – नाम – अमृत विहीन ही है – फिर भी दोनों पक्ष नाचने – गाने में ही विलीन विशेष हैं – एक कहता है मैंने दे दिया – पढ़ा दिया और दूसरा लेट जाता है "मस्ती" में हां – हां मुझे भी मिल गया – मैं तो बिना पढ़े – स्कूल गये ही स्कॉलर बना दिया गया...! फिर ऐसे ब्लातकारियों – महापुरुषों – महात्माओं पर सब कुछ न्योछावर – लुटा क्यों न दिया जाए...? पूरा मामला एक नकटे वाली साखी को प्रमाणित करता है – कि तेरी भी नाक तो अब कट गई – ये तो अब वापस आने वाली नहीं है – इसलिए अपमान से बचना है तो तू भी नाच कि मुझे भी प्रभु के दर्शन हो गए हैं – अगर तू कहेगा भी कि मुझे दर्शन नहीं हुए हैं तो भी कोई तेरी बात पर यकीन ही नहीं करेगा और यह भयानक भीड़ विशेष जो तू देख रहा है ना ये तेरी कब्र यहीं पर बना देंगे – अतः कुछ भी बोलने से पहले अच्छी तरह से सोच – विचार लेना ...! और फिर वो भी भयानक मौत के डर विशेष से नाचने लगता है...? यह सब करने – पढ़ाने वाले तो पहले से ही जानते हैं कि उन्होंने क्या दिया – किया या पढ़ाया है । लेकिन तुझे तो समझना चाहिए चतुर प्राणी कि तुझे क्या मिला है – कितना बड़ा सकॉलर बना दिया गया है..? तेरी समस्या अगर ना बताने की है तो किसी को मत बता ।

लेकिन स्वयं को तो पूछ - बता कि अगर तुझे कुछ भी मिला है तो वो तूने कहां छिपा कर रखा हुआ है...? कम से कम स्वयं से खुद को तो धोखा मत दे...? क्योंकि अगर तुझे कुछ रंच मात्र भी एहसास हुआ है तो एक सच तू यह भी जान ले कि जो इस महा बीमारी रूपी "प्रभु" को तू प्राप्त कर मुक्त विशेष हो चुका है इसका केवल एक सूक्ष्म साजरा भी पूरी सृष्टि को मिटाने और ऊपजाने में घौर स्मर्थ विशेष है...! पूरी सृष्टि इस प्राप्त किए जर्रे को धारण करने में पूरी तरह से असमृर्थ है और देने वाले से एक जर्रा कम होने पर भी ये सृष्टि फना होने पर मजबूर है क्योंकि इस जर्रे की भरपाई किसी भी तरह से नहीं की जा सकती...! मनुष्य बंदर -रिछ इत्यादि को नचाता है - जबकी दोनों ही जड़ - चेतन का संयोग मात्र है अर्थात चेतन आत्मा चेतन बंदर को नचाता है - जब दोनों ही एक से हैं तो फिर ऐसा क्यों है...? क्योंकि एक कमी है बंदर में - वह है बुद्धि की - अगर है भी तो बहुत ही कम - इसी कमी का लाभ उठाया जाता है "लोभ" को बीच में बैठा कर - लोभ यानी के भोजन की खातिर - क्योंकि प्रत्येक जीव को जिंदा सरवाईव करने हेतु अन्न - जल की लगातार आवश्यकता रहती ही है वह भी निरंतर...! और बेचारा बंदर जड़ में फंसा हुआ "चेतन जीव विशेष...!" अब विचारिये क्या जड़ गृह - मंडल - तारे इत्यादि भी बुद्धि रखते हैं स्वयं के पास "भंडार" के रूप में और वह भंडार आपकी बुद्धि - विवेक से बहुत ही अधिक है - इसीलिए

आप भी क्या नाचने - सब कुछ लुटाने के लिए मजबूर विशेष कर - बना दिए जाते हो...?

एक बात सदा याद रखिये कि जो कुछ भी होगा केवल आपके जीते रहने तक ही होगा...! कितना भी जरा सा ही हो - आप को अवश्य लाभ ही होगा मरने के बाद भी...! अगर कुछ भी नहीं हुआ एहसास जरा सा भी तो यकीन जानिए कि मरने उपरान्त भी कुछ नहीं होगा अगर होगा तो केवल निश्चित तौर पर केवल धोखा...! संक्षेप में समझ लो कि उसका बुरा कमाया हुआ कर्मकांड बड़ी ही बेसब्री से आप की कमाई हुई धड़कन रूपी पूंजी दुर्लभ आवश्यक के खत्म - बंद होने का इंतजार विशेष कर रहा है...! और जो भूत कालीन महानो महावतम विशेषो के पीछे लगे - दौड़ रहे हैं स्वयं की दुर्लभ चेतन - पूंजी विशेष को पूरी तरह से लुटाते हुए - इन के बारे में तो बात करना भी केवल मूर्खता के स्तर से भी स्वंय को नीचे गिराना मात्र ही है..? इस लिए बुद्धि का होना आवश्यक है और फिर बुद्धि से भी ज्यादा जरूरी है विवेक का होना । "यह दोनों" ही आत्मा की "कमाई" से प्रत्यक्ष होते हैं - जो कि जड़ शरीर में एक दिमाग के रूप में होता है - यह विवेक केवल पॉजिटिव कमाई होने पर ही उपलब्ध विशेष होता है - इस की कमी होने पर "बुद्धि" तो मिलती है पर "विवेक" का अभाव ही रहता है । इसी लिए जीवन जड़ - जल - पत्थर इत्यादि में ही अपने आधार भूत मूल तत्व की तलाश

करता रहता है...? ज्यादा कमी होने पर तो बुद्धि का भी आंशिक या पूरी तरह से अभाव ही रहता है - यहां तक कि पूरा शरीर ठीक रहने - होने के बावजूद भी पूरी जिंदगी पागलखानों में ही बिताने के लिए "जीव" को "मजबूर" विशेष होना रहना पड़ता है - जिसे कहते है कि "वाट ए वेस्ट"...? दिमाग केवल जड़ ही है - अतः बुद्धि केवल आत्मा को ही दिया जाता है एक विशेष गुण के रूप में - जो कभी भी घटता या बढ़ता नहीं है "प्रभु" की तरह से । इन गुणों के महा अनंत भंडारों में से ही यह रुह को प्राप्त है एक "विशेष स्मर्था" रुपी जर्रा विशेष । रुह के शरीर से अलग होते ही कितना भी काबिल शरीर - दिमाग स्वंय से कुछ भी करना तो दूर रहा हिल भी नहीं सकता - जब फिर मजबूरन जलाने - दफनाने का इंतजाम किया जाता है । विवेकता की कमी विशेष का एक और बेहतर नमूना प्रत्यक्ष हो जाता है कि जीव फिर से एक बार और भूत कालीन कब्रों - दरगाहो - निशानियो इत्यादि की यादगारे बना कर मोहित हो पूरी जिंदगी इन्हीं के पीछे भागता - दौड़ता - तड़पता - दौहराता अपने कीमती दुर्लभ आवश्यक जन्म विशेष को खोता हुआ एक और भूत नाम का नर्क विशेष कमा कर उस दुनिया से भुगतान हेतु सदा के लिए गुम हो जाता है । अब रोने - चिल्लाने से क्या होगा...? यह सच तो केवल जीते जी ही जान - समझ बूझ कर तुम्हें व्यवहारिक रुप से अपनाना चाहिए

था ...? पर अब पछताने से क्या होगा जब चिड़िया रुपी काल ही पूरी तरह से इन्सान रुपी जन्म दुलर्भ "खेत" को "चुग गई"...?

दुनिया में जो सबसे ऊपरी स्तर के बुद्धि संपन्न जीव है - इनके पास भी विवेकता का पूरी तरह से अभाव ही है अगर कुछ है भी तो उस का बहुत सा हिस्सा तो मूर्खों की तरह समाज के ही मान - सम्मान - साधनों इत्यादियो पर ही पूरी तरह से खर्च विशेष हो जाता है...! फिर तो इन में होड़ सी ही लग जाती है अधिक से और अधिक अधिकतम तक की - जो एक ऐसी ललक विशेष है जो भूख - प्यास - वासना - कामनाओं को पूरा करने की ताकत इत्यादि में ही पूरी तरह से दुर्लभ कमाई को खर्च विशेष करवा दिया जाता है...! बात उस से भी बहुत आगे बढ़ा ही दी जाती है "मन द्वारा"- फिर जीव मर्यादाहीन जिंदगी जीने लगता है यहां भी बात नहीं रुकती क्योंकि मन एक ऐसी शक्ति - ताकत है जिसे जितना चाहो खींच कर बढ़ा सकते हो - चाहे प्लस में चाहे माइनस में अर्थात जीव के उत्थान की भी कोई सीमा नहीं होती तो गिरने की भी कोई लकिर या गिनती नहीं की जा सकती...! विवेक के अभाव में बुद्धि तो जीव खर्च करता है पर मर्यादा रहित उपायो - साधनों इत्यादि विशेषो पर - परंतु बात तो अब बढ़ कर साख पर आ टिकती है जिस के चक्कर में जीव इतना नीचे गिर जाता है कि शैतानियत भी शर्मा जाती है और पीछे हट केवल तमाशा देखती है...! उदाहरण के तौर पर जरा

विचारों - एक तुरंत कत्ल की सजा आप चौक पर फांसी देना पसंद करते हो ताकि कोई दूसरा फिर ऐसा कृत्य ना करें...? फिर जब एक खाने वाली चीज - पदार्थ - पेय इत्यादि में मीठे जहर रुपी किसी विशेष कैमिकल को मिला कर पूरे समाज के जीवो के आगे बड़े ही अजीब - अजीब तरीकों - उपायों से लुभावना बनाकर परोसा जाता है तो सेवन करने वाला जीव भी इन्हें भोगता हुआ स्वयं और समाज में गौरान्वित महसूस करता है - लेकिन सच तो यह है कि ये एक ऐसी मौत की और बढ़ता जाता है जो बहुत ही मीठी - लुभावनी - एनरजैटिक दिखती है पर असल में जिंदगी भर के लिये अनेकों अपंगताओं को साथ ले कर के चलती है जो शुरू में तो किसी को भी अपने होने का भाव ही नहीं होने देती - क्योंकि सभी रिपोर्ट तो पॉजिटिव ही आती है - जब पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है - अब फिर मीठा जहर धीरे - धीरे साबित होने लगता है और जीव केवल तड़प तड़प कर, तड़पता हुआ मौत के आगोश में सदा के लिए खो जाता है...! आप जानते हो यह कौन करता है...? समाज के ऊपरी स्तर के वो, बुद्धि जीव प्राणी जो सभी साधनों में भरपूर है - जिन के पास किसी भी चीज की कोई भी सीमा अथवा कमी ही नहीं है - फिर भी अधिकतम की हवस ने उन से ये सब करवा लिया - क्योंकि विवेक की कमी थी अगर कुछ विवेक था भी तो समाज की अमर्यादित योजनाओं पर इस तरह से "सफेद चादर"

का पर्दा बिछाने पर ही खर्च विशेष हो गया कि पता ही नहीं चला कि कब सब कुछ डूब गया...! पूरी सृष्टि का हवा - पानी - मिट्टी - आकाश सब का सब दूषित - विकृत - घिनौना सा बना दिया गया - फिर अब जीव सरवाईव कैसे करें...? केवल तड़प तड़प कर धीरे - धीरे मौत को गले लगाते हुए सिर्फ पूरी तरह से तड़पना यानी के केवल मरना ही बाकी शेष बचता है...? और इन सब को चलाने - करने वाला कौन है...? और कोई नहीं आप का ही घर - परिवार - समाज - धर्म - राजनीति - चै. इत्यादि के सुप्रीम तखत विशेष पर विराजमान होने वालो कोई निकट से निकटतम अपना ही संबंधी विशेष है...? मुबारक हो अब क्या करोगे...? अरे इसे तो किसी भी तरह से बचाना ही है...! ध्यान से किसी को भी इसकी कानो कान भनक तक नहीं लगनी चाहिए । अगर गल्ती से भी ऐसा हुआ तो पूरा का पूरा जहाज ही डूब जाएगा - अतः सावधान रहिएगा क्योंकि पूरे जिंदगी भर की ही मेहनत - अमर्यादित विशेष दांव पर लगी हुई है । समाज - प्रकृति - भूमंडल डूब जाएं उसकी चिंता मत करिएगा...! अरे मूर्ख जब सब कुछ डूबेगा तो तू क्या बचेगा...? विवेक तो गया अब बुद्धि भी भ्रष्ट - खत्म सी हो गई है क्या...! इन कत्लों विशेषो की क्या सजा विशेष निर्धारित करोगे...? यह सब निर्णय आप पर छोड़ा जाता है । एक कत्ल तुरंत की सजा तो आप ने "चौक पर फांसी" से मामला निबटा दिया था अब सोचो और स्वयं को संतुष्ट करो...!

अरे पर अभी तो आप इन्हें बचाने में मशगूल हैं...? और आप जानते हैं कि इसका यह महान कर्मकांड कौन पूरा - निरंतर संपन्न विशेष करवाते हैं...? समाज के वो बुद्धिजीवी जो स्वय को साबित करते हैं कि हम संसार में अधिकतम श्रेष्ठ हैं यानी के I.P.S-I.A.S-I.I.T-I.M.S-I.T- Dr.- Eng. - Pro.- इत्यादि विज्ञान के खोजी अधिकतम बुद्धिमान - जिन्हे स्वंय पर और समाज को इन पर केवल मान ही नहीं बल्कि घौर अभिमान विशेष होता है...? कलयुग में हजारों टन फूलों - पकवानों इत्यादि भेंटों से प्रभु प्रसन्नता हासिल की जाती है जबकि दूसरी तरफ ईश्वर का ही अंश भूख - प्यास - रहने के लिए स्थान - आधारभूत आवश्यकताओं से ही जूझता - निरंतर केवल तड़प - तड़प कर मृत्यु को अपनाता हुआ - बलात्कारियों के आगोश में ही डूबता चला जा रहा है.....? फिर भी अहंकार है कि हम सभ्य समाज के निर्माता और अपने वंशों को आगे बढ़ा रहे हैं.....! एक व्यभिचारी - प्रकृति के जड़ - चेतन प्रत्येक अंग का लगातार भक्षण विशेष करने वाला बलात्कारी दो पैर का जानवर केवल एक पूंछ की ही तो कमी है - ग्रह - मंडल तारों में देवता कैसे साबित हो सकता है.....? जो अंदर से गंदा है - जिस ने घर - परिवार में गंदगी फैला रखी है वो बाहर समाज का - प्रकृति का - पृथ्वी का कूड़ा समेटने वाला - गंदगी साफ करने वाला - एक्सपर्ट - मसीहा - चौकीदार या सफाई अभियानों का अभी ज्ञानी मार्गदर्शक कैसे

साबित हो सकता है.....? अपने भुगतानो - जिम्मेदारियों से आंख मूंद - जप - ध्यान से प्रभु की रजा कैसे प्राप्त की - समझी जा सकती है .....?

"आँख मीच मग सूझ ना पाई-ताही अनन्त मिले किम भाई..? "

"कहा भयो जो दोउ लोचन मूंद के बैठ रहिओ बक धिआन लगाइओ । न्हात फिरिओ लीए सात समुद्रनि लोक गयो परलोक गवाइओ । बास कीओ बिखिआन सो बैठ के ऐसे ही ऐसे सु बैस बिताइओ । साच कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ।"

प्रेम का भाव जड़ - चेतन - प्रकृति में मुक्त भाव - व्यवहार से लोभ - स्वार्थ रहित देना विचरण मात्र है । इसीलिए वाणी का मार्गदर्शन है "ऐसा कम मूले न कीचै जित अंत पछोताईऐ .....!" जब व्यवहारिक समझेंगे तभी लाभ होगा क्योंकि जिंदगी तो पता नहीं कब तुरंत ही बस खत्म विशेष हो जाने वाली है.....?